HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-III (Mediaeval Indian History)

Unit-II (Alauddin Khilji's empire expansion)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 27

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें □□□।

https://youtu.be/mBnei8YI48c

"उत्तर भारत में अलाउद्दीन खिलजी का साम्राज्य विस्तार"

(Alauddin Khilji's empire expansion in North India)

अलाउद्दीन खिलजी का बचपन का नाम अली तथा गुरशास्प था। जलालुद्दीन के दिल्ली तख्त पर बैठने के बाद इसे अमीर–ए–तुजुक का पद मिला। मलिक छज्जू के विद्रोह को दबाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण जलालूदीन से इसे कड़ा–मानिकपुर की सुबेदारी सौप दी। भिलसा, चंदेरी एवं देवगिरि के सफल अभियानी से प्राप्त अपार धन ने इसकी स्थिति और मजबूत कर दी। इस प्रकार उत्कर्ष पर पहुँचे अलाउद्दीन ने अपने चाचा जलालुद्दीन की हत्या कर 22 अक्टूबर 1296 को दिल्ली में स्थित बलबन के लाल महल में अपना राज्याभिषेक सम्पन्न करवाया। राज्याभिषेक के बाद उत्पन्न कठिनाईयों का सफलता पूर्वक सामना करते हुए अलाउद्दीन ने कठोर शासन व्यवस्था के अन्तर्गत अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार करना प्रारम्भ किया।

अलाउद्दीन साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का था। साम्राज्य विस्तार के क्रम में अलाउद्दीन खिलजी ने सबसे पहले अपनी सैन्य व्यवस्था को मजबूती प्रदान की। इसके लिए उसने नई आर्थिक नीति लागू की। इस नई आर्थिक नीति के तहत है उसने अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत किया और एक मजबूत सैन्य प्रशासन स्थापित किया। इस प्रकार अपनी मजबूत सैन्य बल पर उसने उत्तर से दक्षिण भारत तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया। अलाउद्दीन ने उत्तर भारत के राज्यों को जीतकर उस पर प्रत्यक्ष शासन किया तथा दक्षिण भारत के राज्यों को अलाउद्दीन ने अपने अधीन कर उनसे वार्षिक कर वसूला।

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)

अलाउद्दीन खिलजी की उत्तर भारत की विजय.....

गुजरात विजय– 1298 में अलाउद्दीन ने उलुग खाँ एवं नुसरत खाँ को गुजरात विजय के लिए भेजा। अहमदाबाद के निकट 'बघेल राजा कर्ण' (राज कर्ण) और अलाउद्दीन की सेना में संघर्ष हुआ । राजा कर्ण पराजित होकर अपनी पुत्री 'देवल देवी' के साथ भाग कर देवगिरि के शासक रामचन्द्र देव के यहां शरण लिया। खलजी सेना कर्ण की सम्पत्ति एवं उसकी पत्नी कमला देवी को साथ लेकर वापस दिल्ली आयी। कालान्तर में अलाउद्दीन ने कमला देवी से विवाह कर उसे अपनी सबसे प्रिय रानी बनाया। यहीं पर नुसरत खाँ ने हिन्दू हिजड़े (मलिक काफूर) को एक हजार दीनार में खरीदा।

मलिक काफूर – चूँकि मलिक काफूर यह एक हजार दीनार में खरीदा गया था। इसलिए इसे 'हजार दीनारी' भी कहा जाता था। मूलतः यह हिन्दू जाति का एक हिजड़ा था। नुसरत खाँ ने इसे खरीद कर 1298 में गुजरात विजय से वापस जाने पर सुल्तान अलाउद्दीन के समक्ष तोहफे के रूप में प्रस्तुत किया। शीघ्र ही यह सुल्तान के काफी नजदीक आ गया और 1307 में सुल्तान ने इसे दिल्ली सल्तनत का मलिकनाइब बना दिया। इसने सफलतापूर्वक खिलजी सेना का नेतृत्व करते हुए देवगिरि, वारंगल, द्वारसमुद्र, मालाबार एवं मथुरा को जीत कर दिल्ली सल्तनत के अधीन कर दिया। इसकी इस अभूतपूर्व सफलता से प्रभावित होकर अलाउद्दीन ने इसे अपना सर्वाधिक विश्वस्त अधिकारी बना लिया। सत्ता एवं प्रभाव में वृद्धि के साथ–साथ मलिक काफूर की महत्वाकांक्षा बढ़ गयी। 1316 में अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद इसने सुल्तान के नाबालिग लड़के को सिंहासन पर बैठा के राज्य की सम्पूर्ण शक्ति को अपने हाथ में केंद्रित कर लिया, इसने स्वयं गद्दी हथियाने के मोह में फँसकर अलाउद्दीन को दो पुत्रों की आंखे निकलवा कर नाबालिग सुल्तान की मां को बन्दी बना लिया । परन्तु अलाउद्दीन के वफादारों ने संगठित होकर काफूर के सिंहासन पर बैठने के 35 दिन बाद उसकी हत्या कर दी।

जैसलमेर पर विजय– सुल्तान की सेना के घोड़े चुराने के कारण सुल्तान ने यहां के शासक दूदा एवं उसके सहयोगी तिलक सिंह को 1299 में पराजित किया।

. रणथम्भौर पर विजय– यहां का शासक हम्मीर देव अपनी योग्यता एवं साहस के लिए प्रसिद्ध था। अलाउद्दीन के लिए रणथम्भौर को जीतना इसलिए भी आवश्यक था क्योंकि रणथम्भौर के जीते बिना पूरे राजस्थान को जीतना कठिन था। साथ ही राणा हम्मीर देव ने विद्रोही मंगोल नेता मुहम्मद शाह एवं केहब को अपने यहां शरण दे रखी थी इसलिए भी अलाउद्दीन रणथम्भौर को जीतना चाहता था। अतः जुलाई 1301 में अलाउद्दीन ने रणथम्भौर के किले को अपने कब्जे में कर लिया । हम्मीरदेव वीरगति को प्राप्त हुआ। तारीख–ए–अलाई एवं 'हम्मीर महाकाव्य में हम्मीर देव एवं उसके परिवार के लोगों का जौहर द्वारा मृत्यु प्राप्त होने का वर्णन है।

चित्तौड़ पर आक्रमण एवं मेवाड़ विजय (1303)–

मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ थी, शासक राणा रतन सिंह था। चित्तौड़ का किला सामरिक दृष्टिकोण से बहुत ही सुरक्षित स्थान पर बना था, इसलिए अलाउद्दीन की निगाह में चढ़ा हुआ था। अन्ततः 28 जनवरी 1303 में सुल्तान ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। 7 महीने के कठिन संघर्ष के बाद 26 अगस्त 1303 में चित्तौड़ के किले पर अधिकार करने में सफल हुआ । राणा रतन सिंह युद्ध में शहीद हुआ और उसकी पत्नी रानी पद्मिनी ने अन्य स्त्रियों के साथ जौहर कर लिया। किले पर अधिकार के बाद सुल्तान ने करीब 30,000 राजपूत वीरों का कत्ल करवा दिया। उसने चित्तौड़ का नाम अपने पुत्र खिज्रखां के नाम पर खिज्राबाद रखा और उसे खिजखाँ को सौप कर दिल्ली वापस आ गया।

Dr. Girdari Kumar (A.N.D College)

चित्तौड़ को पुनः स्वतन्त्र कराने का प्रयत्न राजपूतों द्वारा जारी था। इसी बीच अलाउद्दीन ने खिज्रखां को वापस दिल्ली बुलाकर चित्तौड़ दुर्ग की जिम्मेदारी राजपूत सरदार मालदेव को सौप दिया । गुहिलोत राजवंश/के हम्मीरदेव ने मालदेव पर आक्रमण कर 1321 में चित्तौड़ सहित पूरे मेवाड़ को आजाद करवा लिया। इस तरह अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद चित्तौड़ एक बार फिर पूर्ण स्वतन्त्र हो गया।

मालवा विजय (1305)– मालवा पर शासन करने वाला 'महलक देव' एवं उसका सेनापति 'हरनंद' (कोका प्रधान) बहादुर योद्धा थे। 1305 में अलाउद्दीन ने मुल्तान के सुबेदार आईन–उल–मुल्क के नेतृव में एक सेना को मालवा पर अधिकार करने के लिए भेजा। दोनों पक्षों के संघर्ष में महलकदेव एवं उसका सेनापति हरनन्द मारा गया । नवम्बर 1305 को किले पर अधिकार के साथ ही उज्जैन, धारा नगरी, चंदेरी आदि को जीत कर मालवा समेत दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया। 1308 में अलाउद्दीन ने सिवाना पर अधिकार करने के लिए आक्रमण किया। वहां के परमार राजपूत शासक शीतलदेव ने कड़ा संघर्ष किया परन्तु अन्ततः मारा गया । कमालुद्दीन गुर्ग को वहां का शासक नियुक्त किया गया।

जालौर– यहां के शासक कान्हणदेव' ने 1304 में अलाउद्दीन की अधीनता को स्वीकार कर लिया था पर धीरे धीरे उसने अपने को पुनः स्वतन्त्र कर लिया। 1305 में कमालुद्दीन गुर्ग के नेतृत्व में सुल्तान की सेना ने कान्हणदेव को युद्ध में पराजित कर उसकी हत्या कर दी। इस प्रकार जालौर पर अधिकार के साथ ही अलाउद्दीन की राजस्थान विजय का कठिन कार्य पूरा हुआ। 1311 तक उत्तर भारत में सिर्फ नेपाल, कश्मीर एवं असम ही ऐसे भाग शेष बचे थे। जिन पर अलाउद्दीन अधिकार नहीं कर सका था। उत्तर भारत की विजय के बाद अलाउद्दीन ने दक्षिण भारत की ओर अपना रुख किया।

आगे भी यह जारी है.....

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)